''क्या तू मुझ से प्रेम करता है?''

(21:1-25)

तरल कागज एक ऐसा अद्‌भुत आविष्कार है जो अमेरिका में लगभग प्रत्येक सचिव की मेज़ पर देखा जा सकता है। यह स्याही जैसा एक तरल उत्पाद होता है जो एक छोटी सी शीशी में मिलता है और लिखते समय कोई गलती होने पर छोटे से ब्रश से लगाया जाता है। कागज पर कोई गलत शब्द या धब्बा पड़ जाने पर तरल कागज से उस पर पेंट कर दिया जाता है और समस्या हल हो जाती है। यदि हमारे जीवनों के लिए तरल कागज मिल जाए तो कितना अच्छा हो, जिससे हमारी गलतियों के प्रमाण मिट जाएं? कड़वा सच यह है कि हम सभी को इसकी आवश्यकता है। यूहन्ना रचित सुसमाचार का अंतिम अध्याय बताता है कि हम अपने जीवनों में असफल होने और कुछ ''आत्मिक तरल कागज'' की आवश्यकता होने पर एक नई शुरुआत का अनुभव कैसे कर सकते हैं।

सैटिंग (21:1-14)

पुनरुत्थान के बाद और स्वर्ग पर उठाए जाने से पहले किसी समय, यीशु फिर अपने कुछ चेलों पर प्रकट हुआ। उनमें से सात गलील सागर (तिबरियास के सागर) के आस पास अपने घरों को चले गए थे। पतरस निश्चय ही अभी इस बात से दुखी था कि उसने प्रभु का उसके मुकदमे की रात तीन बार इन्कार कैसे कर दिया और कहने लगा, ''मैं मछली पकड़ने को जाता हूं'' (21:3)। दूसरे चेले उसके साथ आ गए उन्होंने सारी रात झील पर बिता दी परन्तु कोई मछली न पकड़ पाए। भोर होने से पहले, एक परछाई किनारे पर दिखाई दी और उनसे पूछने लगी, ''हे बालको, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है?'' (21:5)। यह पहचान न पाने पर कि वह यीशु ही था, वे चिल्लाए, ''नहीं'' (21:5)। अजनबी ने उनसे कहा कि यदि वे किश्ती के दाहिनी ओर अपने जाल डालें तो कुछ मछलियां मिल सकती हैं। कारण कोई भी हो, परन्तु उन्होंने अजनबी का सुझाव मानकर जाल डाल दिया।

जब वे अपने जाल बाहर खींचने लगे तो खींच नहीं पाए क्योंकि जाल मछलियों से भरा हुआ था। तभी यूहन्ना ने पहचान लिया कि किनारे पर खड़ा वह अजनबी कौन है और

पतरस से कहने लगा, ''यह तो प्रभु है'' (21:7)। पतरस जो हमेशा उतावलापन दिखाता था जल्दी से अपने ऊपरी वस्त्र पहनकर समुद्र में कूद गया और किनारे तक करीब एक सौ गज तैरकर चला गया। जब दूसरे चेले मछलियां उठाकर वहां पहुंचे, तो उन्होंने पाया कि यीशु ने कोयले की आग जलाकर उनके नाश्ते के लिए कुछ रोटी और मछलियां तैयार कर रखीं हैं। शायद अगली घटना के प्रकाश में, यह बात महत्वपूर्ण थी, कि यूहन्ना रचित सुसमाचार में वहां भी कोयले की आग का ही उल्लेख है जहां पतरस ने यीशु का इन्कार किया था (18:18)।

यीशु ने चेलों को आकर कुछ नाश्ता करने के लिए कहा, और उन्होंने खाया। उन्होंने बिना कुछ विचार किए वह भोजन खा लिया होगा और खाते हुए वहां बेचैनी भरी चुप्पी रही होगी। आप उस व्यक्ति से क्या कहेंगे जो मर गया था पर अब जी उठा हो ? जब परमेश्वर का पुत्र आपको नाश्ता करा रहा हो तो कौन सी आवश्यक बात की जा सकती है ?

सामना (21:15)

जब चेले खाना खत्म कर रहे थे, तो यीशु ने पतरस की ओर मुड़कर उससे भयभीत करने वाले परन्तु बड़े महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे: ''भोजन करने के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है ?'' (21:15)। इतने आसान से प्रश्न से यीशु ने पतरस के पाप को उभारकर उस आत्मिक घाव को हरा कर दिया जिससे पतरस के प्राण जाने का भय था। यदि पतरस के पाप को सामने न लाया जाता, तो वह मन न फिराता और न ही उसे क्षमा मिलती तो शायद महान प्रेरित पतरस एक और गलीली मछुआरे की तरह दुखी और निराश जीवन बिताता।

यह अजीब बात है कि हम अपने पाप छुपाने और दोष का इन्कार करने का प्रयास करते हैं। लोग हमेशा ऐसा ही करते हैं, पर कभी भी इससे कोई भलाई नहीं निकली। हम वास्तव में यह बहाना बनाकर कि पाप है ही नहीं पाप से बचने के बजाय, अन्त में पाप को बढ़ने का अवसर दे देते हैं।

वाल्ट डिज़नी की फिल्म *द लायन किंग* दोष और लज्जा की शक्ति का एक अध्ययन है। यह सिम्बा नामक एक जवान सिंह की कहानी है जिसके पिता की जंगली जानवरों की भगदड़ में मृत्यु हो गई थी। सिम्बा का स्कार नामक दुष्ट और कायर चाचा, घमण्ड का अगला राजा बनना चाहता था, परन्तु वह जानता है कि ऐसा तभी हो सकता है यदि नन्हा सिम्बा मर जाए। छिपे हुए पाप की शक्ति को जानते हुए, स्कार सिम्बा से यह कहते हुए कि ''तू ने यह क्या किया ? तेरी मां क्या सोचेगी ?'' पहले तो अपने भतीजे पर उसके पिता की मृत्यु का आरोप लगाता है, फिर, जब सिम्बा पूछता है कि उसे क्या करना चाहिए, तो स्कार कहता है, ''भाग जा!'' और सिम्बा भाग जाता है।

अपने दोष से भागने के वर्षों बाद जब सिम्बा घर लौटने और अपने अतीत का सामना करने का साहस जुटाता है। तो वहां पहुंचकर वह अपने परिवार को बचाकर अपने पिता के राज्य में न्याय को फिर से बहाल कर पाता है।

जब तक स्कार उसे अपने दोष से भगाने में सफल रहा तब तक सिम्बा पर उसका नियन्त्रण था। सच्चाई को स्वीकार करने पर ही सिम्बा को स्वतन्त्रता मिल पाई (8:32)।

गुप्त पाप की शक्ति भी नथेनियल हाअथॉर्न के नावल *द स्कारलेट लैटर* की विषय-वस्तु ही है। प्युरिटन न्यू इंग्लैंड की पृष्ठभूमि में बनी, यह हेस्टर प्राइन नामक एक महिला की कहानी है जो अपने पति की अनुपस्थिति में गर्भवती हो जाती है। उसकी बदनामी पर चर्चा करने और उसे दण्ड सुनाने के लिए समाज की पंचायत में मुकदमा चलता है। गांव के बुज़ुर्ग हेस्टर पर बच्चे के पिता को पहचानने का दबाव बनाने की कोशिश करते हैं पर वह नहीं मानती। उसे अपने कुर्ते के आगे लाल रंग में अंग्रेज़ी का अक्षर ''A'' (''व्यभिचारिन'' दर्शाने के लिए) बनाकर इसे लोगों में जाने के समय पहनने का दण्ड मिलता है। इसे पहली बार पहनने पर उसे नगर के केन्द्र में सार्वजनिक मचान पर कई घण्टे खड़े रहना पड़ता है। यह उसके लिए बहुत ही भयानक दण्ड है, पर वह अपने दण्ड को स्वीकार करके जीना कबूल कर लेती है।

कहानी में रोजर डिमसडेल नामक एक और पात्र है जो एक प्रचारक है। हर किसी के प्रिय और आदरणीय डिमसडेल को एक दर्दनाक रहस्य छुपाना पड़ता है: वह हेस्टर के बच्चे का पिता है। बाद में कहानी में, डिमसडेल अपने पाप के दोष से बचने के लिए कई ढंग अपनाता है। वह बाइबल अध्ययन करता है, प्रार्थना में लगा रहता है और कभी-कभी तो अपने पाप के प्रायश्चित के लिए अपने आपको कोड़े भी मारता है। इससे उसे कोई लाभ नहीं होता और उसका स्वास्थ्य गिरने लगता है। इन दो लोगों की कहानी में हेस्टर शुरू में एक अबला स्त्री होती है पर धीरे-धीरे वह मजबूत हो जाती है; डिमसडेल नगर का एक आदरणीय व्यक्ति होता है पर धीरे-धीरे वह ऐसे कमज़ोर होने लगता है, जैसे कोई आत्मिक कैंसर उसे अन्दर ही अन्दर खा रहा हो।

हाअथॉर्न की कहानी में रोजर चिलिंगवर्थ एक अजीब पात्र है। बेशक नगर के लोग यह बात नहीं जानते, पर वह हेस्टर का तलाकशुदा पति है। वह हेस्टर के साथ व्यभिचार में लिप्त व्यक्ति को दण्ड देना अपना उद्देश्य बना लेता है। शीघ्र ही यह पता चलने पर कि दोषी वह प्रचारक है, चिलिंगवर्थ उसकी ''सहायता करता'' है और उसे अपने गुप्त रहस्य को बरकरार रखने के लिए कई तरह से उत्साहित करता है।

अंत में, पुस्तक के चरम वाले अंतिम दृश्य में डिमसडेल अपने जीवन का सबसे शानदार संदेश देता है। मण्डली के लोग चर्च की बिल्डिंग से निकलकर नगर की गलियों में आते हैं, वे उस मचान से होकर जाते हैं जहां वर्षों पहले अपने नये सिले पहनावे पर ''A'' अक्षर लिखे हेस्टर खड़ी थी। हर कोई हैरान था, डिमसडेल लज्जा के उस स्थान पर रुककर अपने निर्बल शरीर से बड़े साहस और शक्ति से हेस्टर और उसके बच्चे को अपने पास आने के लिए बुलाता है। चिलिंगवर्थ उसे यह आश्वासन देते हुए कि उसका रहस्य अभी भी बना रह सकता है, उससे रुकने की बिनती करता है।

परन्तु, अब तक डिमसडेल को समझ आ जाता है कि चिलिंगवर्थ शैतान का एक सेवक है, सो वह उसे एक ओर धकेल देता है। फिर वह और हेस्टर और उनका बच्चा

मचान पर चलते हैं और वह प्रचारक अपने पाप को ईमानदारी से स्वीकार कर लेता है। यह जानकर कि वह हार चुका है, चिलिंगवर्थ डिमसडेल को बताता है कि पूरी दुनिया घूमने के बाद भी अपने चंगुल से बचने का सम्भावित स्थान केवल अंगीकार और मन फिराव का स्थान वह मचान ही था!

डिमसडेल को अपना पाप प्रकट हो जाने का भय ही इतने दिनों से रोके हुए था। विडम्बना यह है कि अन्त में उसे स्वतन्त्रता केवल अपने पाप का अंगीकार करने से ही मिलती है।

भजन 32 पाप का सामना करने और आत्मा को अपंग बनाने की पाप की शक्ति से स्वतन्त्रता ढूंढ़ने के बीच का सही सम्बन्ध है।

> जब मैं चुप रहा तब दिन भर कराहते कराहते
> मेरी हड्डियां पिघल गईं।
> क्योंकि रात दिन मैं तेरे हाथ के नीचे दबा रहा
> और मेरी तरावट धूप काल की सी झुरहिट बनती गई।
> जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया
> और अपना अधर्म न छिपाया,
> और कहा, मैं यहोवा के साम्हने अपने अपराधों को मान लूंगा;
> तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया
> (आयतें 3-5)।

पतरस से यह पूछकर कि क्या वह उससे प्रेम करता है, यीशु अपने गिरफ्तार होने और मुकदमे के दौरान पतरस द्वारा प्रभु के भयंकर इन्कार से पहले की उसकी घमण्डपूर्ण पीड़ादायक बात को सामने ला रहा था। इस कठिन विषय से बचना आसान रहा होगा, पर उसकी उपेक्षा करने में पतरस की भलाई नहीं थी। गुप्त पाप विनाशकारी होता है, सो यीशु ने पतरस के पाप को सबके सामने लाकर उसके साथ सीधे पेश आना था।

बहाली (21:15-17)

तीन बार यीशु ने पतरस से पूछा कि क्या वह उससे प्रेम करता है। शायद यह पतरस को यीशु में अपने विश्वास का उतनी बार ही अंगीकार करने का अवसर देने के लिए था जितनी बार उसने पहले प्रभु का इन्कार किया था। पहले यीशु ने यह प्रश्न पूछते हुए दो बार यूनानी शब्द *अगापे* का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ है "परमेश्वर का प्रेम।"[1] पतरस ने दोनों बार यूनानी शब्द *फीलियो* से उत्तर दिया जिसका अर्थ है "मैत्री प्रेम।" यीशु के अंतिम प्रश्न में *फीलियो* शब्द का इस्तेमाल हुआ और पतरस ने उसी शब्द का इस्तेमाल करते हुए उत्तर दिया। *अगापे* प्रेम का एक उच्च रूप है, पर यीशु कह रहा था कि परमेश्वर *फीलियो* प्रेम को ग्रहण कर सकता है, जो कि पतरस उस समय परमेश्वर को भेंट कर सकता था (शायद पतरस को अपने आप में इतना कम आत्मविश्वास था)।

पाप से बहाली के मार्ग को समझने के लिए हमें यीशु द्वारा पूछे गए प्रश्न को ध्यान में रखना चाहिए: ''क्या तू मुझ से प्रेम रखता है ?'' पाप में जाने पर हम और भी बहुत से प्रश्नों में फंस जाते हैं जो केवल वास्तविक प्रश्न से हमारा ध्यान हटाने के लिए ही होते हैं। हम पूछते हैं, ''क्या यह मेरा दोष था ?'';''क्या मैंने दूसरों से अधिक पाप किया था ?'';''क्या दूसरे लोग मुझे फिर से ग्रहण कर लेंगे'';''मैंने ऐसा क्यों किया ?'' एक के बाद एक प्रश्न आते हैं। पतरस को वापस लाने में अगुआई के लिए यीशु ने उसे दिखाया कि परमेश्वर के पास लौटने के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि ''क्या तू मुझ से प्रेम रखता है ?''

जितनी बार पतरस ने यीशु के प्रश्न का उत्तर दिया, यीशु ने उसे उतनी ही बार एक आदेश दिया। उसने कहा, ''मेरे मेमनों को चरा'' (21:15), ''मेरी भेड़ों की रखवाली कर'' (21:16) और ''मेरी भेड़ों को चरा'' (21:17)। पतरस के लिए उसकी क्षमा आंशिक नहीं बल्कि उसके पाप से दूर करके फिर से यीशु के एक प्रेरित के रूप में जगह दी गई थी। आज जब हम अपने पाप से मुड़ते हैं, तो यीशु हमसे वही अर्थात अपने राज्य में फिर से काम पर लग जाने के लिए कहता है!

निमन्त्रण (21:19)

यीशु द्वारा पतरस को वापस लाने का अंतिम चरण ''मेरे पीछे हो ले'' शब्दों के साथ आया (21:19)। यीशु ने इन शब्दों का इस्तेमाल पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के आरम्भ में अपने चेलों को बुलाने के लिए किया था और इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल उसने समुद्र किनारे उस सुबह पतरस के साथ अपनी मुलाकात के अंत में किया। ''मेरे पीछे हो ले!'' यीशु द्वारा अपने चेलों को बुलाने की मुख्य बात है, जिसमें हम भी शामिल हैं। ''मेरे पीछे हो ले!'' से यह पता नहीं चलता कि हम कितने आगे बढ़ गए हैं बल्कि यह संकेत मिलता है कि हम किस ओर जा रहे हैं। इसका हमारे अतीत या अन्य चेलों से तुलना से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसमें निर्बल, जवान और अपरिपक्व सभी लोग आ जाते हैं। यह हर किसी को, जहां भी वह है किसी भी समय यीशु की ओर चलने के लिए कहता है। पतरस बहुत देर से यीशु के साथ चला आ रहा था, पर वह दूर गिर गया था। अपनी विजय के बाद और अपने दुख के समय, पतरस को यीशु की पुकार थी: ''मेरे पीछे हो ले!'' आज भी हमें यीशु की बुलाहट के लिए स्पष्ट आज्ञा यही है।

सारांश

यदि आप अभी मसीही नहीं हैं, तो रास्ता बड़ा आसान और स्पष्ट है। इसकी शुरुआत वहां से होती है जिसे बाइबल में ''विश्वास'' कहा गया है।[2] विश्वास के लिए यीशु पर भरोसा रखकर उसकी इच्छा को मानना शामिल है। विश्वास अपने आपको मन फिराव (पाप से मुड़कर परमेश्वर की ओर लौटना)[3] और इस अंगीकार में कि यीशु ही ''प्रभु'' है, व्यक्त करता है।[4] तब यीशु के पीछे चलने के यादगारी फैसले पर मुहर हो जाती है और बपतिस्मे के सुन्दर कार्य में व्यक्त किया जाता है।[5]

यूहन्ना ने सुसमाचार की यह पुस्तक हमारे मनों में विश्वास उत्पन्न करने के लिए लिखी (20:30, 31)। क्या आपको विश्वास हो गया है ? क्या आप यीशु में विश्वास रखते हैं ? क्या आप मसीही बन गए हैं ? क्या इस यात्रा से आपका विश्वास मजबूत हुआ है ? यदि हुआ है, तो यीशु सचमुच इस बात से आनन्दित है कि हमें ''उसके नाम में जीवन मिला है।''

पाद टिप्पणियां

[1]1 कुरिन्थियों 13:4-7 *अगापे* की एक उत्कृष्ट व्याख्या है। [2]यूहन्ना 3:16; मरकुस 16:16; प्रेरितों 16:31-34. [3]मत्ती 4:17; लूका 13:3; प्रेरितों 2:38; 17:30. [4]यूहन्ना 20:28; मत्ती 10:32; रोमियों 10:9, 10. [5]यूहन्ना 4:1; प्रेरितों 2:38; 8:38; रोमियों 6:4-6; गलातियों 3:26; कुलुस्सियों 2:12.